WOMEN

महिला आध्यात्मिक सशक्तिकरण

महिला प्रभाग

राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान एवं

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

प्रथम संस्करण :
मार्च, 2006

प्रतियाँ : 5000

मुद्रक:
ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस,
शान्तिवन, आबू रोड – **307 510**
☎ – 228125, 228126

पुस्तक मिलने का पता:
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – **307 501**

कापी राइट:
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – **307 501**
राजस्थान, भारत ।

शुभकामनाएँ

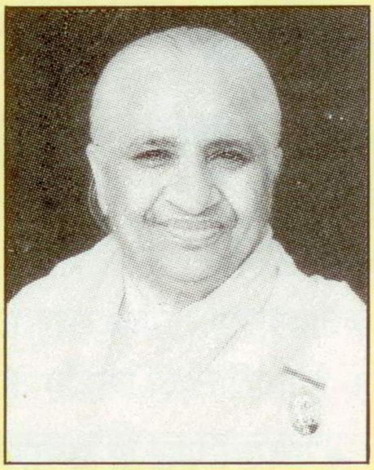

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के अन्तर्गत महिला प्रभाग में महिलाओं के नैतिक एवं आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए विशेष यह चित्र प्रदर्शनी निर्मित की है। नारी शक्ति है, कल्याणी है – ऐसा चिरातीत से कहा जाता रहा है परन्तु समयान्तर में नारी का गौरव कम होता गया, उसका शोषण होने लगा एवं उससे असभ्य व्यवहार किया जाने लगा। परिणामस्वरूप न केवल समाज का अधोपतन हुआ बल्कि घर-गृहस्थ का वातावरण भी दूषित होता गया।

वर्तमान में, पहले की अपेक्षा महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, उसे राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में कई अधिकार मिले हैं, परन्तु उसके प्रति दृष्टिकोण एवं व्यवहार में पूर्ण परिवर्तन नहीं आया है। इस कारण परिवार टूट रहे हैं और नई पीढ़ी के नैतिक स्तर में उत्तरोतर गिरावट हो रही है। घरों में सामंजस्य, स्नेह, शान्ति नहीं है। महिला ही परिवार की धुरी है। माता ही बच्चों के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास की प्रथम गुरु है। अत: महिलाओं का आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के साथ-साथ आध्यात्मिक सशक्तिकरण भी आवश्यक है। परमपिता परमात्मा शिव के मार्ग-दर्शन में पिछले 70 वर्षों से यह कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय कर रहा है। प्रस्तुत चित्र प्रदर्शनी में चित्रों के माध्यम से महिलाओं के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के विभिन्न पहलुओं को सरल व्याख्या देकर स्पष्ट किया गया है। आशा है अधिक-से-अधिक महिलायें इससे आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को, घर परिवार को सुखी-सम्पन्न-खुशहाल बनाने में सफलता प्राप्त करेंगी। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

ईश्वरीय सेवा में

बी.के. प्रकाशमणि

(बी.के. प्रकाशमणि)

मुख्य विषय

- मुख्य पृष्ठ से सम्बन्धित
- पुरुष प्रधान संस्कृति और नारी
- आधुनिक नारी
- नारी के स्वाभाविक गुण
- नारी शक्ति की अभिव्यक्ति
- नारी चरित्र निर्माता
- आदि शक्ति और नारी
- आदि शक्ति का स्त्रोत – अनादि, आदि पिता
- नारी सशक्तिकरण के लिए आत्म-ज्ञान
- नारी-परिवार रूपी रथ का आधार
- नारी सशक्तिकरण से सर्वांगीण विकास
- नारी एक दीप-स्तम्भ
- राजयोग से विश्व उद्धारक – विश्व जननी माता
- महिला प्रभाग का लक्ष्य एवं उद्देश्य

मुख्य पृष्ठ से सम्बन्धित

महिला को अंग्रेज़ी में women कहते हैं। इन पांच अक्षरों में नारी के महत्त्वपूर्ण गुण समाहित हैं।

W (Will power) – मनोबल को प्रतिबिम्बित करता है। विश्व इतिहास में ऐसे अनेक मिसाल हैं जब नारियों ने अपने दृढ़ मनोबल द्वारा कठिन परिस्थितियों में विजय प्राप्त की। प्रस्तुत चित्र में दर्शाया गया है कि अनेक महिला खिलाड़ियों ने अपने उच्च मनोबल से ओलम्पिक खेलों में विजय प्राप्त की, मैडल्स जीते। न सिर्फ खेल जगत में परन्तु अन्य क्षेत्रों में भी उन्होंने अपनी योग्यता साबित की है।

O (Oneness) – एक ही लगन में मगन हो जाना – जहाँ भी मनुष्य की लगन लग जाती है, वहाँ उसे सफलता प्राप्त हो जाती है, फिर चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक या आध्यात्मिक कोई भी क्षेत्र हो। मीराबाई ने एक कृष्ण से लगन लगाकर, अपने आराध्य समान उच्च स्थिति को प्राप्त किया।

M (Might) – शक्ति – चित्र दर्शाता है कि जब आत्मा की आन्तरिक शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं तो नारी अबला नहीं, शक्ति स्वरूपा बन जाती है। शिव शक्ति, दुर्गा, काली, अम्बा बनकर वह विश्व से दुर्गुणों एवं बुराइयों का विनाश करने के महान् कार्य में सहयोगी बन जाती है।

E (Enlightenment) – दिव्यता – ज्ञान के प्रकाश से स्वाभाविक गुणों जैसे स्नेह, त्याग, सहनशीलता, करुणा आदि में दिव्यता आ जाती है और नारी सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली जगदम्बा बन जाती है।

N (Nobility) – उदारता – चित्र में दर्शाया है कि श्रीकृष्ण उदारता के युग के प्रतीक हैं। माँ का हृदय भी उदार, विशाल होता है। अपने इस गुण से वह परिवार के सभी सदस्यों की कमियों को समाकर, परिवार को एक सूत्र में बांधे रखती है।

कर शोषण हर मोड पर, उसका सब कुछ लूटे।
कहलाती जो शक्ति स्वरूपा, भाग्य उसी के फूटे।

पुरुष प्रधान संस्कृति और नारी

21वीं सदी में मानव ने चमत्कारिक उपलब्धियाँ हासिल की हैं परन्तु कुछ क्षेत्रों में आज भी अपेक्षित परिवर्तन नहीं हुए हैं। उदाहरण के लिए, नारी की दशा और दिशा को ही लीजिए। आज भी वही सदियों पुरानी पुरुष प्रधान व्यवस्था है।

सत्ता चाहे राजनीतिक हो, आर्थिक हो, सामाजिक या पारिवारिक, केन्द्र में पुरुष ही है, फलतः पुरुष द्वारा नारी का अनेक स्तरों पर शोषण होता है। उसे पीड़ित, प्रताड़ित किया जाता है। उसे बिक्री के साधनों के रूप में अश्लील ढंग से विज्ञापनों में प्रस्तुत किया जाता है। बलात्कार की घटनायें भी आम हैं। छेड़छाड़, उत्पीड़न जैसे अपराधों में बढ़ोतरी हुई है।

प्रस्तुत चित्र दर्शाता है कि अहंकारग्रस्त पुरुष जब सामाजिक एवं पारिवारिक जिम्मेवारियों का निर्वहन नहीं करते तब महिला को ही कठोर परिश्रम करके बच्चों के लालन-पालन, भरण-पोषण की व्यवस्था करनी पड़ती है। पुरुष द्वारा उत्पन्न की गई इन स्थितियों में वह हीनभावना से ग्रस्त होकर घर की अन्य महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करती है। ननद-भाभी, सास-बहू, देवरानी-जेठानी के झगड़े जगजाहिर हैं। दहेज की समस्या कम होने के स्थान पर बढ़ती जा रही है। आधुनिक अल्ट्रा सोनोग्राफी जाँच में लिंग परीक्षण की सुविधा मिलने से कन्या भ्रूण-हत्या जैसी घटनाओं का ग्राफ ऊँचा उठ रहा है। अपने पर हो रहे अत्याचार, अन्याय से मुक्ति के लिए नारी को ही आगे आना होगा, सार्थक पहल करनी होगी।

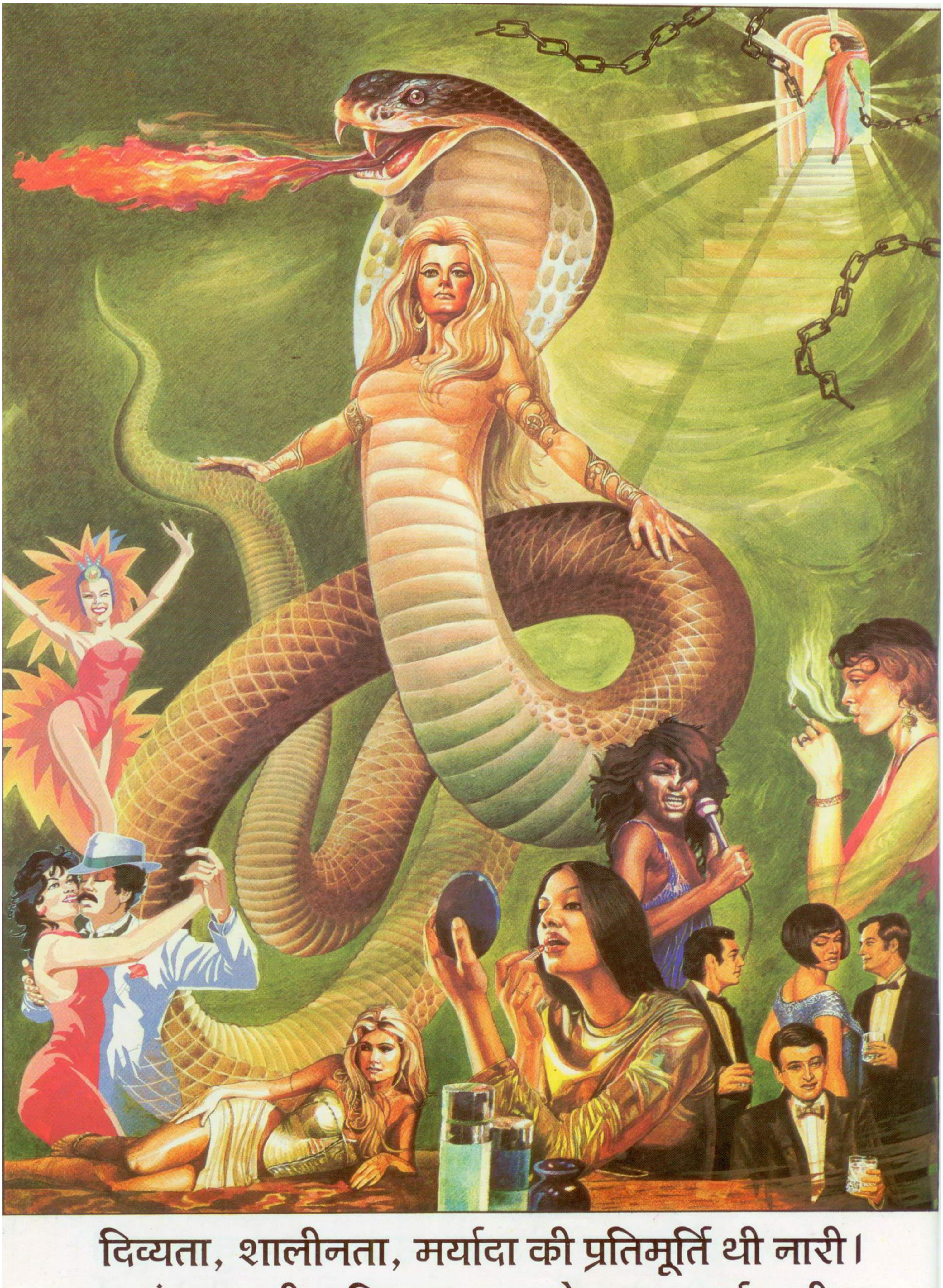

दिव्यता, शालीनता, मर्यादा की प्रतिमूर्ति थी नारी।
स्वतंत्रता बनी अभिशाप, तब से लाचार हुई नारी।।

आधुनिक नारी

उच्च शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक जागरण ने आधुनिक नारी को अपने अधिकारों एवं स्वतंत्रता का अनुभव कराया है। परन्तु स्वतंत्रता के नाम पर कहीं-कहीं स्वच्छंदता बढ़ती जा रही है। स्वच्छन्द नारी स्वयं को पुरुष की पूरक नहीं परन्तु प्रतिद्वन्द्वी मानने लगी है, फलस्वरूप, परिवार टूटने लगे हैं। ऐसी स्त्रियाँ बच्चों के भविष्य की भी कोई परवाह नहीं करती हैं। कई स्त्रियाँ तो धन कमाने के लिये अनुचित साधन भी अपनाती हैं। प्रस्तुत चित्र इसी स्थिति को दर्शाता है कि कैसे आज की नारी धन की, नाम की खातिर देह का व्यवसाय कर रही है। कम वस्त्र पहनकर व्यभिचार को बढ़ावा दे रही है। क्लबों , पार्टियों में डांस, शारीरिक प्रदर्शन से वेश्यावृत्ति को आधुनिक रूप दिया जा रहा है। सुंदर दिखने की चाह में सौंदर्य प्रसाधनों का अनुचित एवं असीमित प्रयोग किया जा रहा है। मद्यपान, धूम्रपान एवं दूसरे व्यसन महिलाओं में भी बढ़ते जा रहे हैं।

दूसरे अर्थों में सादगी, सरलता, पवित्रता, त्याग, सहिष्णुता, आत्मसंयम जैसे आन्तरिक सौन्दर्य बढ़ाने वाले बहुमूल्य गुणों का नारी में नितांत अभाव देखने में आ रहा है। अश्लीलता, मर्यादाहीनता का यह विष समाज में तीव्र गति से फैल रहा है। विज्ञापनों में नारी के अर्द्ध नग्न चित्र सभी टी.वी.चैनलों पर बार-बार दिखाये जाते हैं। आज इस बात की आवश्यकता है कि नारी अपनी सच्ची स्वतंत्रता को पहचाने, अपने चरित्र को उज्ज्वल बनाये। सादा जीवन, उच्च सकारात्मक विचारों एवं आध्यात्मिकता का पालन ही उसे भोग्या से पूज्या और अबला से शक्तिसम्पन्न देवी बना सकता है।

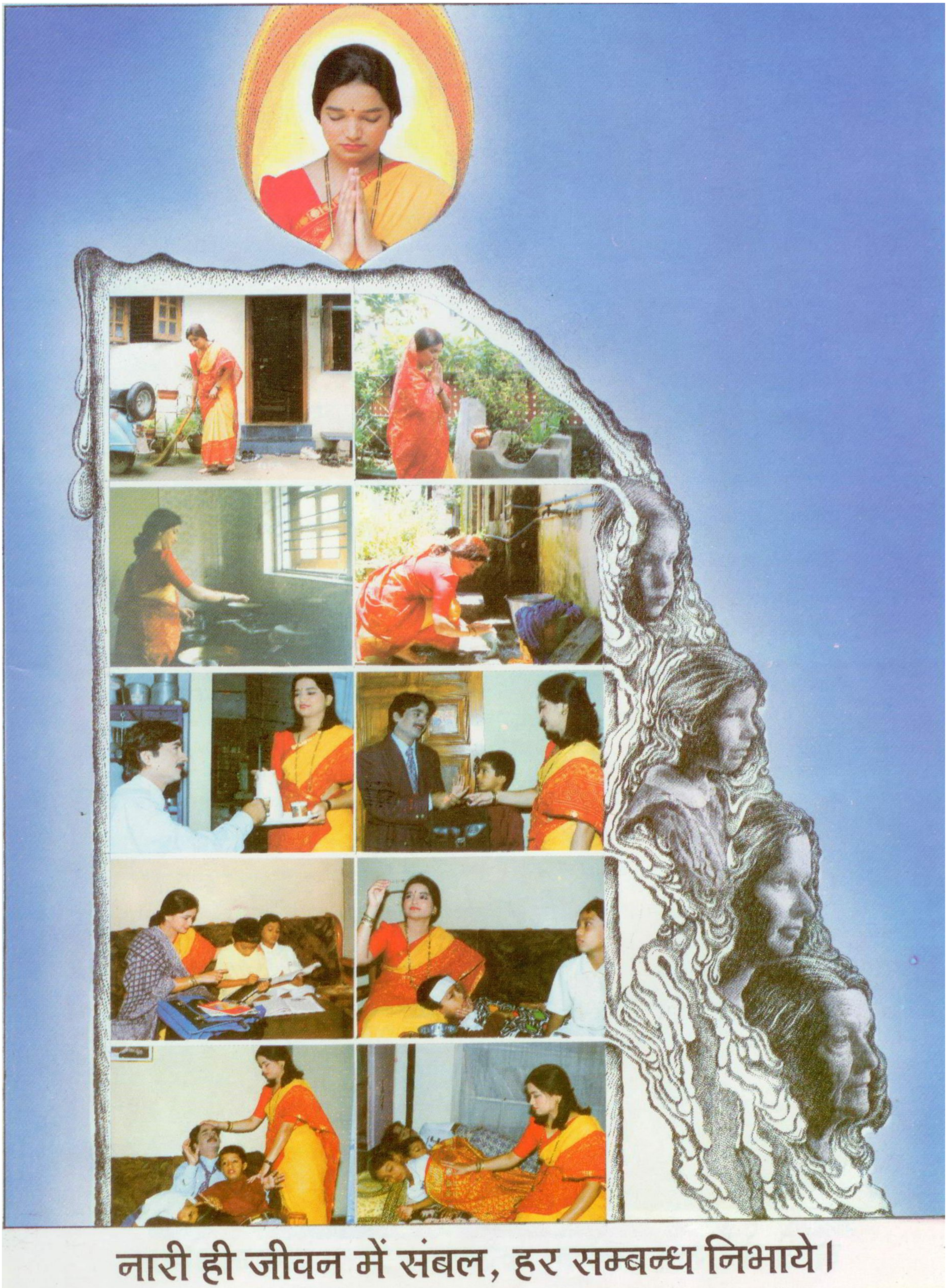

नारी ही जीवन में संबल, हर सम्बन्ध निभाये।
जीवन के हर दुर्ला पल में, गुणमूर्त बन जाये।।

नारी के स्वाभाविक गुण

गुणमूर्त नारी की दिनचर्या सेवाओं पर आधारित है। सफाई करना, फिर परिवार कल्याण की कामना से पूजापाठ करना, भोजन तैयार करना, सारे परिवार के वस्त्रों की धुलाई करना, मेहमानों का स्वागत कर परिवार के लिये दुआओं का अर्जन करना, दूसरों की सहयोगी बनकर रहना, बच्चों की पढ़ाई में मदद करना, बीमारी में परिवार के प्रत्येक सदस्य की अथक सेवा करना, सभी को प्यार देकर मनोबल बढ़ाना, धैर्य से विघ्नों को पार करने में मदद देना एवं सभी के विश्राम की व्यवस्था के बाद ही स्वयं विश्राम लेना, ये उसकी सहज क्रियायें हैं जिनका वह कोई मूल्य नहीं चाहती। सबके सुख में अपना सुख ढूँढ लेती है, सन्तुष्ट हो लेती है। परिवार कल्याणी तू धन्य है !!!

प्रस्तुत चित्र उसी स्थिति को उजागर करता है कि मातृ-शक्ति सेवा की जीवन्त प्रतिमा है, उसके स्नेह का कोई पारावार नहीं। व्यक्तिगत हित और व्यक्तिगत स्वार्थ को वह परिवार हित में महत्त्व नहीं देती है। वह जागती-ज्योति बन पूरे परिवार के लिये निःस्वार्थ सेवा का प्रकाश देती रहती है।

ध्यान, साधना से पारिवारिक पीढ़ियों के संस्कारों को और भी अधिक श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। मातायें, बहनें और पत्नियाँ ही परिवार के लोगों की भावनाओं एवं मस्तिष्क को संतुलित करने का कठिन कार्य कर सकती हैं। इसके लिये उनका स्वयं की भावनाओं एवं मस्तिष्क पर नियंत्रण आवश्यक है। अतः समाज उत्थान में नारी की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि विश्व परिवर्तन के महान् कार्य की ईकाई परिवार है।

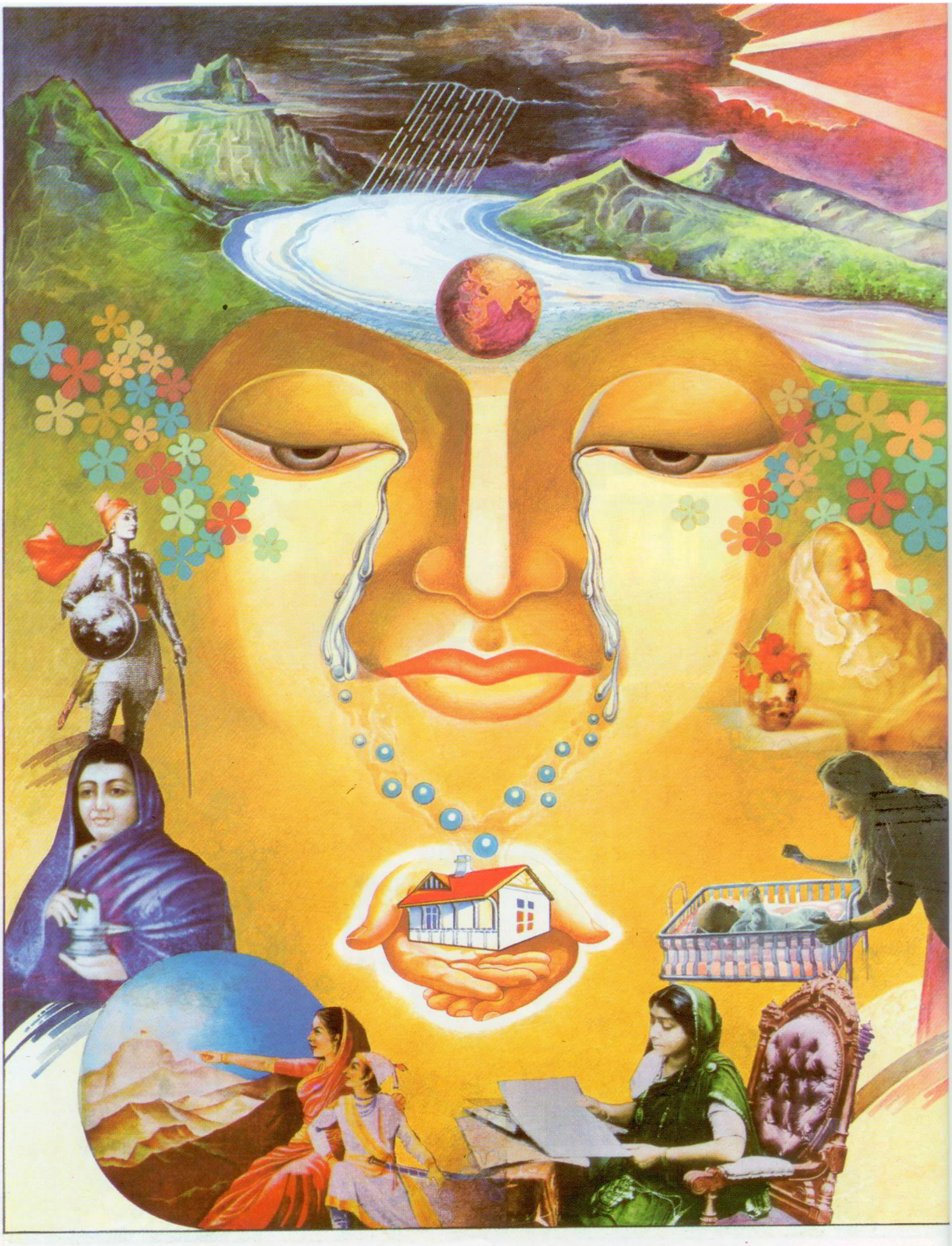

नारी तेरे रूप अनेक, करुणा-ममता सब में श्रेष्ठ।
माँ जीजा बन शिवा को जन्मा, मीरा-लक्ष्मीबाई जैसे रूप अनेक।

नारी शक्ति की अभिव्यक्ति

सभी के जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। नारी कठिन परिस्थितियों के समय यातनाओं को सहकर भी अपने आवेगों पर नियंत्रण रखने में अत्यधिक कुशल है। वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिये अधिकतर हिंसात्मक तौर-तरीके नहीं अपनाती।

प्रकृति के समान नारी के स्वाभाविक संस्कार, सहनशीलता, धैर्य, उदारता एवं दातापन के हैं। प्रकृति अपनी असीम सम्पदा से विश्व को सम्पन्न करती है और नारी अपने हर कार्य से परिवार में उन्नति एवं सम्पन्नता लाने का प्रयास करती है। उदाहरण के लिये प्रकृति में पानी के चक्र को लें। सागर का पानी सूर्य की गर्मी से बादल बनकर जब खेत-खलिहानों, पहाड़ों, मैदानों में बरसता है तो जड़, चेतन सभी प्रकृति की इस देन से खिल उठते हैं। इसी प्रकार, नारी भी अनेक प्रकार की कठिनाइयों की गर्मी को सहकर भी परिवार के सदस्यों को अपने प्रेम, सरलता, ममता से हर्षित रखने का प्रयास करती है। अपने इन गुण रूपी मोतियों से घर को सुरक्षित रखती है।अनेक ऐसे नारी चरित्रों से इतिहास गौरवान्वित हुआ है। उदाहरण के लिये – झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों के विरुद्ध साहस और वीरता का परिचय दिया। अहिल्या बाई होल्कर ने निमित्त भाव धारण कर अपने राज्य की बागडोर सफलतापूर्वक सम्भाली। माता जीजाबाई ने सुपुत्र वीर शिवाजी को बाल्यकाल से ही निर्भयता, वीरता के पाठ पढ़ाकर चरित्रवान बनाया। सरोजनी नायडू ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। माँ मदालसा ने अपने हर बच्चे को आत्मज्ञान का पाठ पढ़ाकर अलौकिक मार्ग की ओर अग्रसर किया। फ्लोरेन्स नाइंटिगेल ने मरीजों की नि:स्वार्थ सेवा कर विश्व में अनोखी मिसाल कायम की।

अत: नारी के अन्तर्मन में शक्तियों का अजस्त्र स्त्रोत है। जहाँ-जहाँ उसे अवसर मिले, उसने स्वयं को सर्वश्रेष्ठ एवं सुयोग्य सिद्ध किया है। अब जबकि स्वयं परमात्मा अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान दे रहे हैं तथा उन्होंने ज्ञान कलश बहनों - माताओं के सिर पर रखा है, तो नारियों को विश्वकल्याण के इस महान् कार्य में स्वयं को लगाकर अपने गुणों का सबूत देना है।

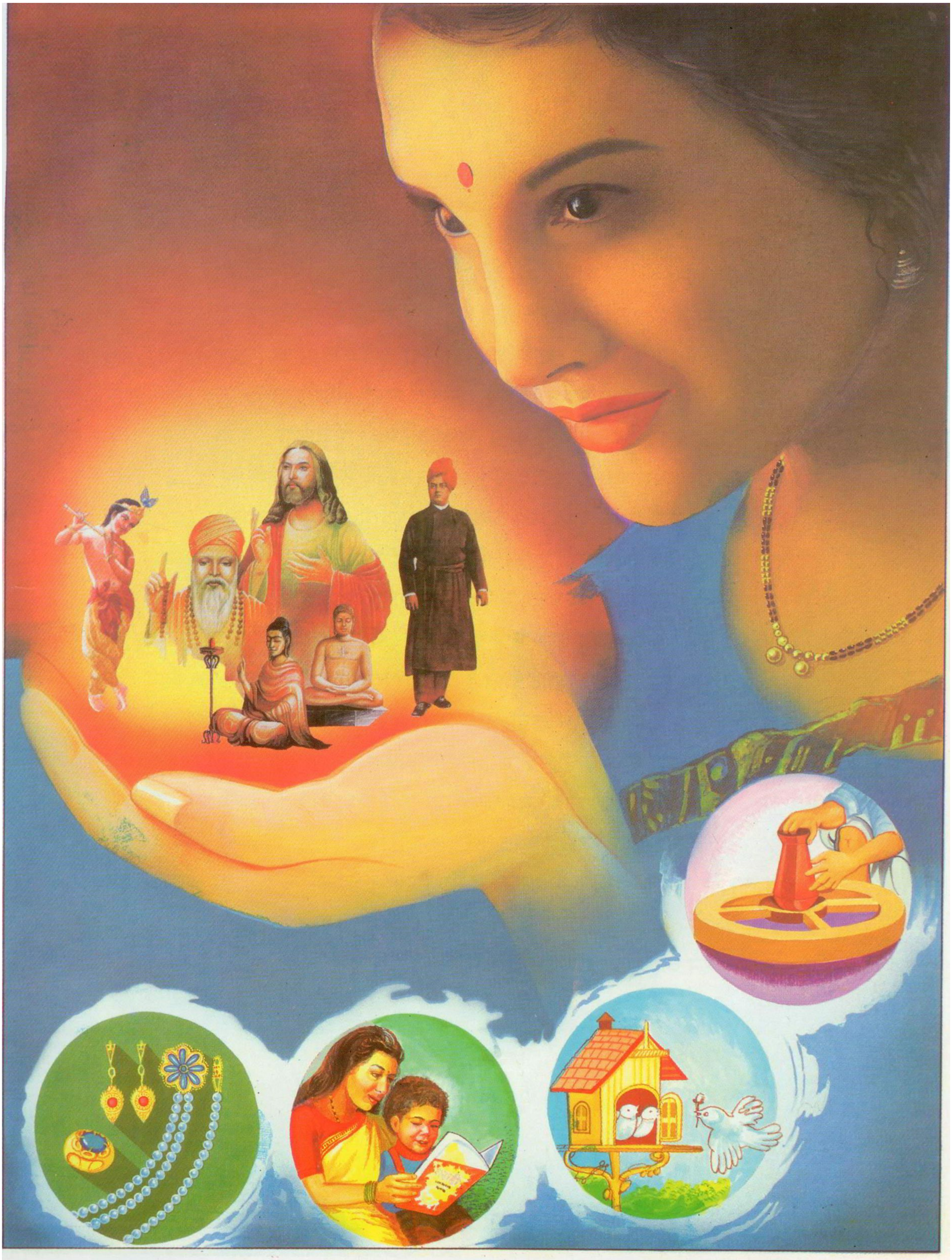

महान् सपूतों को जन कर, वीरों की माँ कहलाई।
गौतम, महावीर और नानक को जन्मा, विश्व-धर्मा कहलाई।।

नारी चरित्र निर्माता

नारी सृजन देवी के रूप में प्रतिष्ठित है तो साथ-साथ जीवन के विकास एवं निर्माण की भी जिम्मेवार है।

इस विकास प्रक्रिया में सन्तान को श्रेष्ठ चारित्रिक मूल्य प्रदान करने का कार्य नारी के हाथों ही सम्पन्न होता है।

ऐसे अनेक महान् सपूत मातृ शक्ति ने समाज को प्रदान किये हैं जिनके चरित्रों से विश्व प्रकाशित हुआ है। महात्मा बुद्ध, महावीर, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी आदि आज संसार में महान् विभूतियों के नाम से जाने जाते हैं। ये विभूतियां मातृशक्ति की चरित्र निर्माण की दायित्व भावना से ही निर्मित हुई हैं।

जिस प्रकार कुम्हार, कच्ची मिट्टी के गोले को हाथों का सहारा देकर, दर्शनीय एवं उपयोगी आकार में परिणित कर देता है, उसी प्रकार माँ भी अबोध बालक में, स्नेहपूर्ण पालना एवं मार्गदर्शन से श्रेष्ठ संस्कारों का सिंचन करती है।

माता ही बालक की प्रथम गुरु है, वही बालक की प्रारंभिक पाठशाला है। प्रकृति प्रदत्त गुरुपद द्वारा वह मधुरता, शालीनता, संतुष्टता, गम्भीरता, अनुशासन, ईमानदारी, आत्मसंयम जैसे अनेक गुणों से बालक को सहज ही सुसज्जित कर सकती है। ये वे सच्चे आभूषण हैं, जो मातृशक्ति द्वारा ही बच्चे को पहनाये जा सकते हैं। इन गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में सौभाग्यशाली होता है। इस निमित्त मां का स्वयं का चरित्र ऊँच और महान् हो, वह गुणों की स्वरूपा हो, यह आवश्यक है।

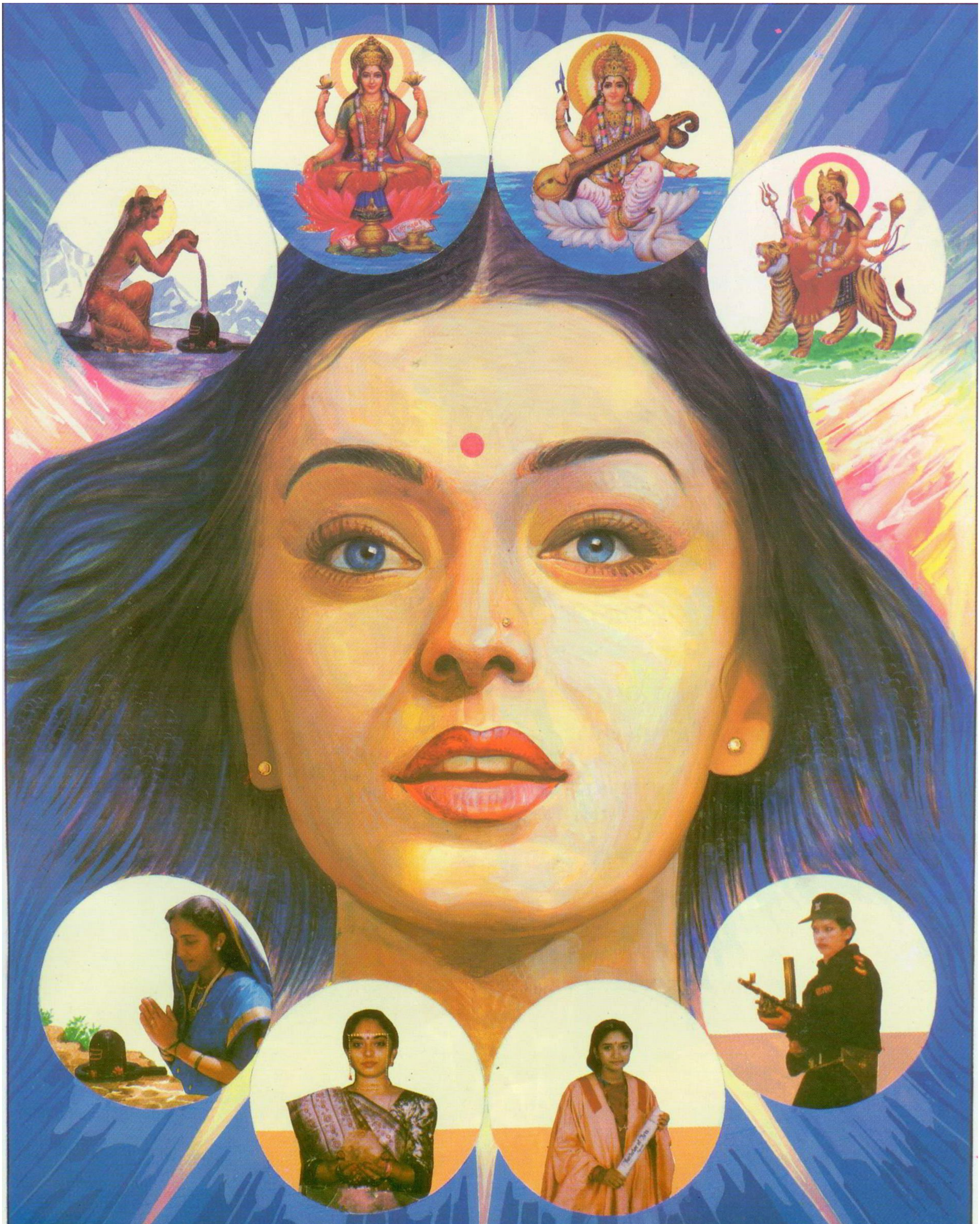

वर्तमान में भी नारी ने, हर विधि को अपनाया।
धरती पर तो कीर्ति बिखेरी, गगन में भी ध्वज फहराया।।

आदि शक्ति और नारी

भारतीय संस्कृति में नारी का गौरवपूर्ण पूज्य स्वरूप एवं आदि शक्ति देवी के रूप में सर्व गुण सम्पन्न स्वरूप विशेष प्रतिष्ठित है। इसमें तपस्या की देवी उमा, धन की देवी लक्ष्मी, ज्ञान की देवी सरस्वती एवं शक्ति की देवी दुर्गा मुख्य हैं।

आज की नारियां इन्हीं शक्तियों की वंशज हैं परन्तु भौतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का जो संतुलन आदि देवी में है, उसका आज की नारी में सर्वथा अभाव दिखाई देता है। एक पक्षीय अनुसरण के सन्दर्भ में, भौतिक क्षेत्र में उसने एक से बढ़कर एक उंचाइयों को छुआ है परन्तु दूसरे पक्ष अर्थात् आध्यात्मिक मूल्यों की अवहेलना करने से उसका यह प्रयास पूर्ण सकारात्मक परिणाम नहीं दे रहा है।

चित्र में दर्शाया गया है कि वर्तमान नारी भी अपनी मनोकामनायें पूर्ण करने के लिये ईशभक्ति करती है। कुलवधू के रूप में घर-परिवार को धन-धान्य से सम्पन्न करने के प्रयास के कारण उसे लक्ष्मी का पद प्राप्त है। माँ सरस्वती की वारिस बनकर आज वह शिक्षा एवं अध्ययन के क्षेत्रों में बड़ी-बड़ी उपाधियाँ प्राप्त कर रही है। माँ दुर्गा का अनुसरण करते हुये सेना व पुलिस में अपना योगदान देकर वह देश के शत्रुओं एवं असामाजिक तत्वों के नाश में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

परन्तु फिर भी उसमें आदि शक्ति की तुलना में दिव्यता, पवित्रता और गुण सम्पन्न स्थिति का अभाव है। अब प्रश्न उठता है कि उसमें ये दिव्यगुण कहाँ से आयेंगे? इन आदि शक्तियों को किसने इन गुणों से सजाया था? उसी आध्यात्मिक वैभव को पुन: विकसित करने की आवश्यकता है।

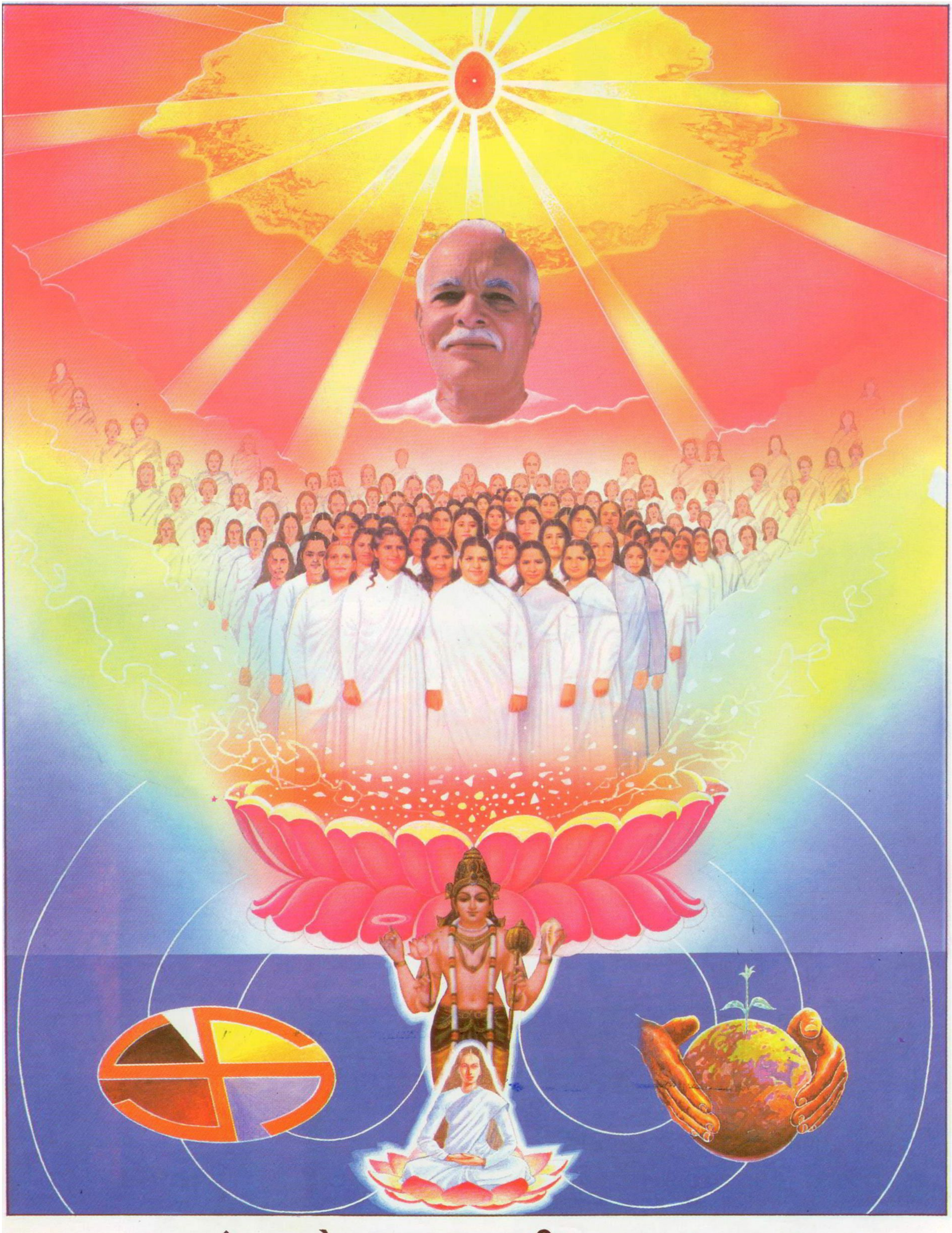

स्वयं प्रभु ने ब्रह्मा द्वारा, गीता ज्ञान पढ़ाया।
पवित्रता का आसन देकर, राजयोग सिखलाया।।

आदि शक्ति का स्त्रोत - अनादि, आदि पिता

नारी को पुन: आदि शक्ति के पूज्य स्थान पर प्रतिष्ठित करने का कार्य, निराकार परमपिता परमात्मा शिव संगमयुग पर, परमधाम से इस साकार सृष्टि में आदि पिता ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित होकर करते हैं। परमात्मा शिव ही सर्व आत्माओं के अविनाशी, अनादि परमपिता हैं। परमात्मा शिव द्वारा प्रदत्त ज्ञान और योग की शिक्षा से नारी में आध्यात्मिक शक्ति का संचार होने लगता है। अनादि गुणों के अनुभव से उसका सोया स्वमान जागृत हो जाता है और इस प्रकार परमात्मा शिव एवं प्रजापिता ब्रह्मा की अलौकिक मार्गदर्शना से साधारण नारी शक्ति स्वरूपा बन जाती है।

चित्र में दर्शाया गया है कि परमपिता परमात्मा आध्यात्मिक रुचि वाली कन्याओं-माताओं का एक विशाल संगठन तैयार करते हैं और पतित सृष्टि को पावन बनाने के पुनीत कार्य में उन्हें ही निमित्त बनाते हैं। चित्रित कमलपुष्प न्यारे, पवित्र और निर्लिप्त जीवन का प्रतीक है। ईश्वरीय ज्ञान की समझ, सहज राजयोग के अभ्यास तथा दिव्य गुणों की धारणा द्वारा पवित्रता के आसन पर विराजमान होकर, ईश्वरीय सेवा के महान कार्य में नारी सहायक बन जाती है।

नारी को, ईश्वरीय ज्ञान द्वारा सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान होने के साथ-साथ स्वस्वरूप, स्वलक्ष्य, स्वधर्म की भी जागृति आ जाती है। इस शक्ति से वह स्वयं को, समाज में अपने प्रति प्रचलित कुमान्यताओं और बन्धनों से मुक्त कर पाती है। राजयोग के अभ्यास से उसमें तपस्या की शक्ति भर जाती है, जिससे विघ्न उसे पथ विचलित नहीं कर पाते।

लक्ष्मी-नारायण बनने के लक्ष्य को सामने रखने से दिव्य गुणों की धारणा सहज ही जीवन में होने लगती है। इसी आधार पर विश्व परिवर्तन के महान कार्य में परमात्मा शिव की पूर्ण सहयोगी भुजा के रूप में वह कार्य कर रही है।

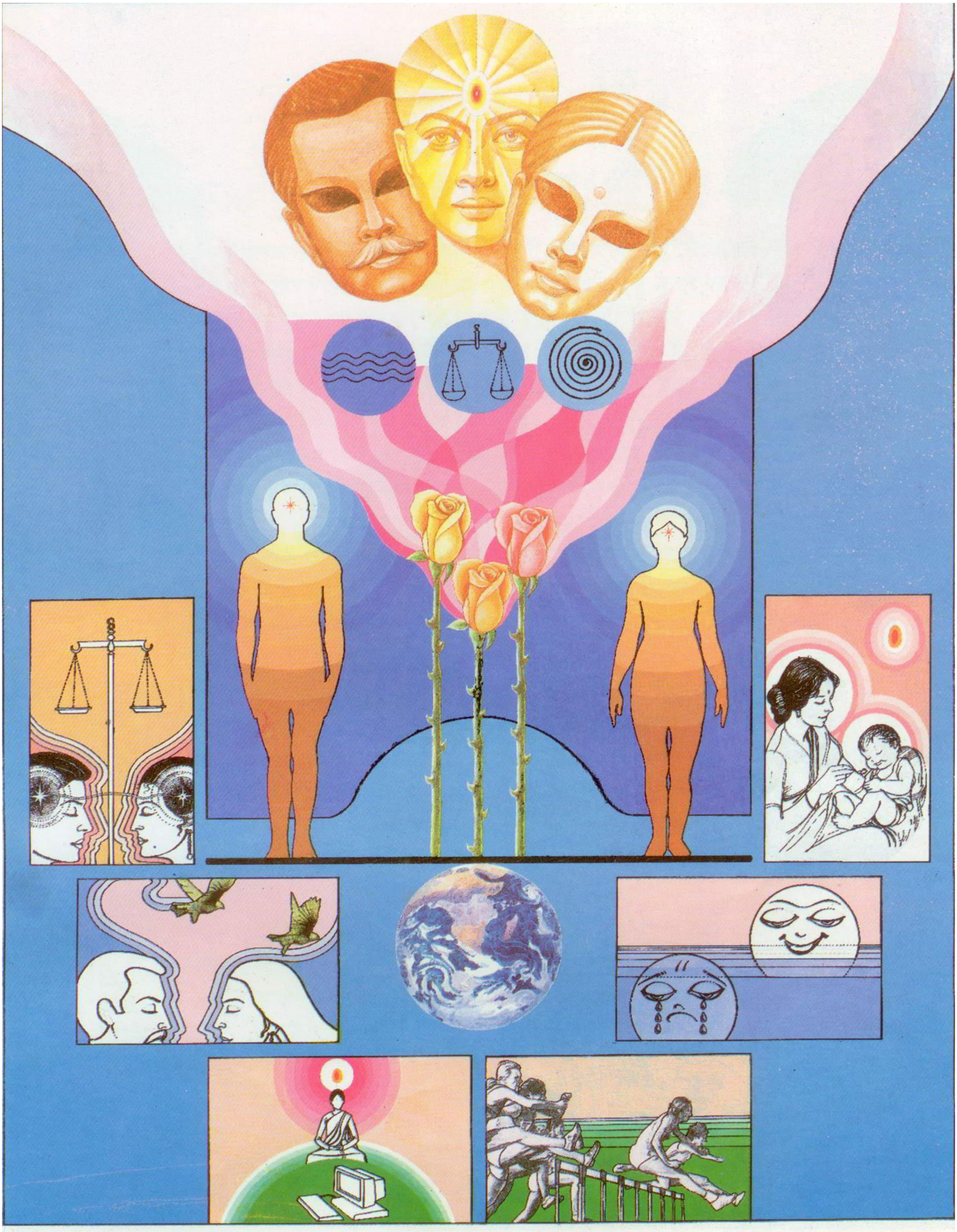

पहन के चोला नर-नारी का, भिन्न-भिन्न कहलाये।
यदि आत्मा का ज्ञान स्वयं में, अन्तःचक्षु खुल जाये।।

नारी सशक्तिकरण के लिये आत्म-ज्ञान

अजर, अमर, अविनाशी आत्मा और देह मिलकर चेतन मानव का रूप लेते हैं। आत्मा ही शरीर की मालिक है। वह जिस लिंग वाला शरीर धारण करती है वैसा ही सम्बोधन (स्त्री या पुरुष) उसे प्राप्त होता है। जैसे मुखौटा पहनने पर बाह्य स्वरूप की पहचान बदल जाती है, ऐसे ही लिंग रहित, चैतन्य अविनाशी आत्मा भी स्त्री और पुरुष के मुखौटे पहनकर सृष्टि रंगमंच पर कभी स्त्री रूप में और कभी पुरुष रूप में भिन्न-भिन्न पार्ट बजाती है। कोई भी आत्मा सदा ही स्त्री रूप में और सदा ही पुरुष रूप में पार्ट नहीं बजाती है परन्तु जन्म-पुनर्जन्म के खेल में आत्मा कभी नारी कभी नर बनती है। आत्मा अपने मूल रूप में अति सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है जिसमें मन, बुद्धि, संस्कार ये तीन सूक्ष्म शक्तियाँ कार्यरत हैं। मन विचार शक्ति है, बुद्धि निर्णय शक्ति है और विचारों एवं निर्णय लेने के आधार पर जैसे कर्म करती है वैसे ही उसके संस्कार निर्मित होते हैं। इसी आधार पर कोई आत्मा महान आत्मा, कोई पुण्यात्मा तो कोई पापात्मा भी कहलाती है।

चित्र में दर्शाया है कि आत्मा को जब स्त्री या पुरुष के भान से परे आत्मिक स्वरूप की स्मृति रहती है तो उसका जीवन फूल के समान दिव्यगुणों की सुगन्धी बिखेरने लगता है परन्तु आत्म-स्वरूप को भूलने से, मुखौटों के भान में रहने से जीवन विकारों एवं दुख-अशान्ति के कांटों में उलझने लगता है। एक-दूसरे के प्रति आत्मिक दृष्टि एवं व्यवहार होने से, अधिकार भावना समाप्त हो, पारस्परिक शुद्ध स्नेह, सम्मान भावना का विकास होता है औरआत्मा देहभान और विकारों से मुक्त होकर सच्ची स्वतंत्रता का अनुभव करने लगती है। आत्मिक स्थिति में रहने से नारी के आत्मिक गुण निखरने लगते हैं, उसमें आत्म-सम्मान जागृत होने लगता है। साथ-साथ परमपिता से योग लगाने से उसे दिव्य शक्तियां प्राप्त होने लगती हैं जिससे भौतिक क्षेत्र में भी उसकी कार्यक्षमता बढ़ जाती है। आत्मज्ञान से आत्मबल बढ़ता है जिससे बड़ी-बड़ी समस्यायें भी सहज पार हो जाती हैं और जीवन दिव्य मुस्कानों से सम्पन्न होने लगता है। ऐसी सशक्त नारी, अपनी संतान को देवतुल्य संस्कार देने में समर्थ होती है। अब वह समय आ गया है कि आत्मज्ञान पर आधारित आध्यात्मिक सशक्तिकरण का स्वरूप बनकर संसार को स्वर्ग बनाने की दिशा में नारियाँ अग्रसर हों।

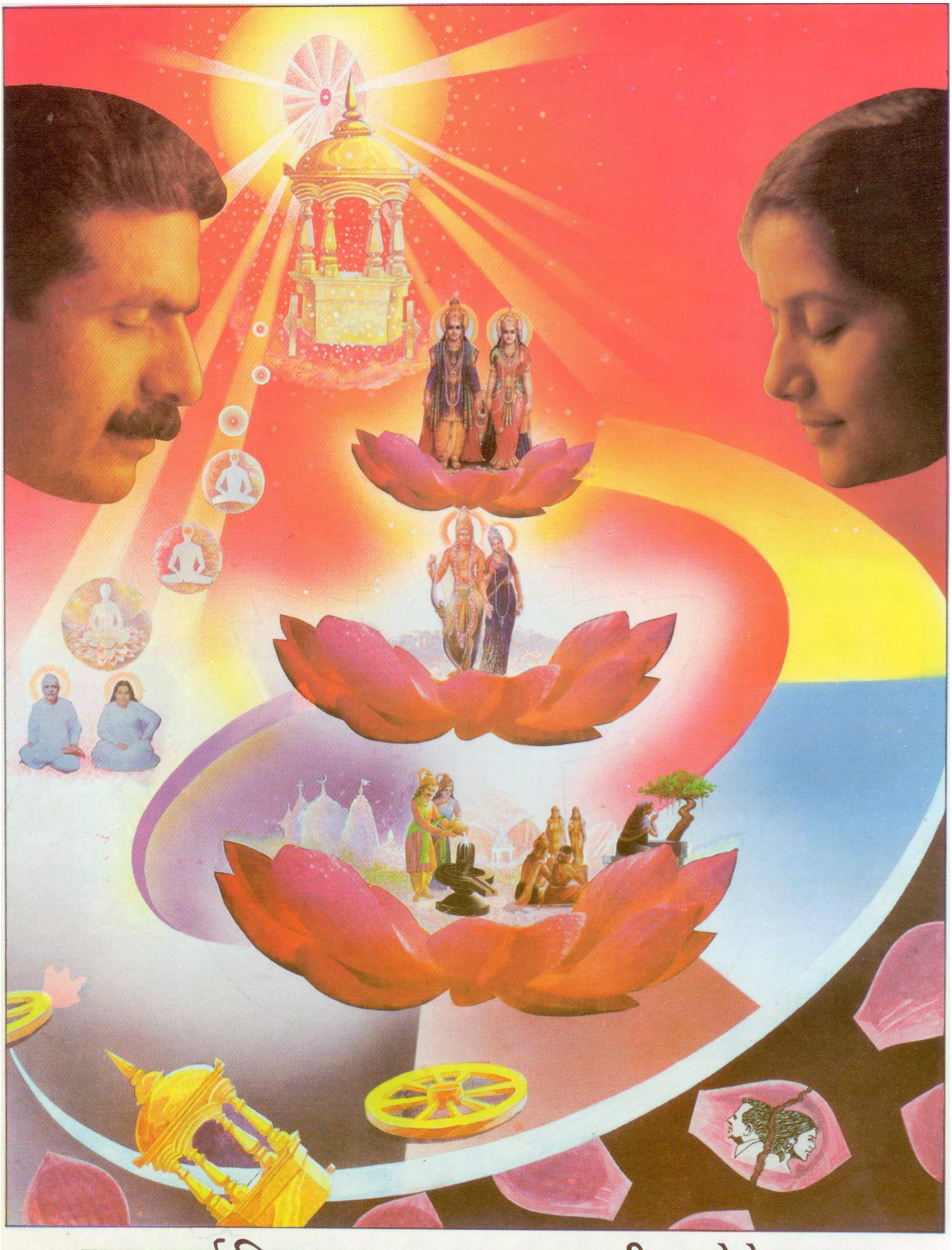

ज्ञान सूर्य शिव प्रकट धरा पर, नवजीवन देने आया।
ईश्वरीय विश्व विद्यालय का अद्भुत संसार रचाया।।

नारी-परिवार रूपी रथ का आधार

संसार में प्रत्येक व्यक्ति परिवार में जन्म लेता है। अनेक परिवारों से समाज, समाज से राष्ट्र एवं इस वृहद् विश्व का निर्माण हुआ है। परिवार को यदि एक सुन्दर एवं सुसज्जित रथ मानें तो स्त्री एवं पुरुष इस परिवार रूपी रथ के दो पहिये हैं। परिवार की उन्नति एवं संतुलित विकास के लिये दोनों पहियों का समान एवं मजबूत होना आवश्यक है। परन्तु हम देखते हैं कि हर युग में नर एवं नारी की स्थिति एक समान नहीं रही है वरन् परिवर्तित होती रही है।

चित्र में दिखाया है कि सतयुग में, जो सृष्टि का आदिकाल था, नर एवं नारी दोनों को समान अधिकार थे तथा नारी को देवीपद एवं पूर्ण सम्मान प्राप्त था। यहाँ श्री लक्ष्मी, श्री नारायण का सम्पूर्ण सुख-शान्ति से सम्पन्न अटल दैवी स्वराज्य था। 1250 वर्ष पश्चात् श्री राम एवं श्री सीता के राज्य वाले त्रेतायुग का प्रारम्भ हुआ, जहाँ सतयुग की तुलना में नर एवं नारी में 2 कलाएँ कम थीं परन्तु फिर भी नारी का स्थान यथावत् सम्मानपूर्ण एवं समान था। इन दोनों युगों के लिये ही गायन है, यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता। लेकिन त्रेतायुग के पश्चात्, द्वापरयुग में नारी की स्थिति में तीव्रगति से परिवर्तन हुआ। देहअभिमान के कारण समाज में पुरुष प्रधान व्यवस्था होने लगी और नारी को पुरुष से निम्न दर्जे का आंका जाने लगा। पुरुष का प्रकृति पर विजय प्राप्त करना और आत्मा को पुरुष तथा प्रकृति को स्त्रीलिंग कहना, इनके यथार्थ भाव को न समझने के कारण पुरुष तन की आत्मा, स्त्री तन की आत्मा का शोषण करने लगी। इस प्रकार नारी, अनेक प्रकार के शोषण, अत्याचार एवं भेदभावपूर्ण व्यवहार का शिकार होने लगी। उसकी स्थिति दीन-हीन याचक जैसी होने लगी। इस असमानता से उत्पन्न दु:ख की मुक्ति के लिये अनेक धर्मपिता सद्गुणों का उपदेश देने के लिये अवतरित होने लगे परन्तु नारी को कमतर समझने का यह दौर समाप्त नहीं हुआ और कलियुग में स्थिति और भी दयनीय हो गई। नारी आए दिन बलात्कार, मारपीट, हत्या तथा अमानवीय अत्याचारों की भुक्तभोगी बनने लगी। परिणामस्वरूप परिवार रूपी रथ असंतुलित होकर बिखरने लगा।

कलियुग के अन्तिम समय में अबलाओं की पुकार सुनकर स्वयं सर्वशक्तिवान, सर्व समर्थ निराकार परमात्मा शिव परमधाम से पिताश्री ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित होकर नारी को उसका खोया सम्मान एवं गौरव पुन: प्राप्त करवाते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान एवं योग के द्वारा उसके सुषुप्त दैवी गुणों एवं शक्तियों को पुन: जागृत कर उसे देवी पद पर आसीन करते हैं। यह श्रेष्ठ ईश्वरीय कर्त्तव्य अभी चल रहा है। अभी ही नारी अपने जीवन को श्रेष्ठ, हीरे-तुल्य बना सकती है और घर-संसार को आश्रम बनाकर स्वर्ग समान बना सकती है। याद रखिये – **अभी नहीं तो कभी नहीं।**

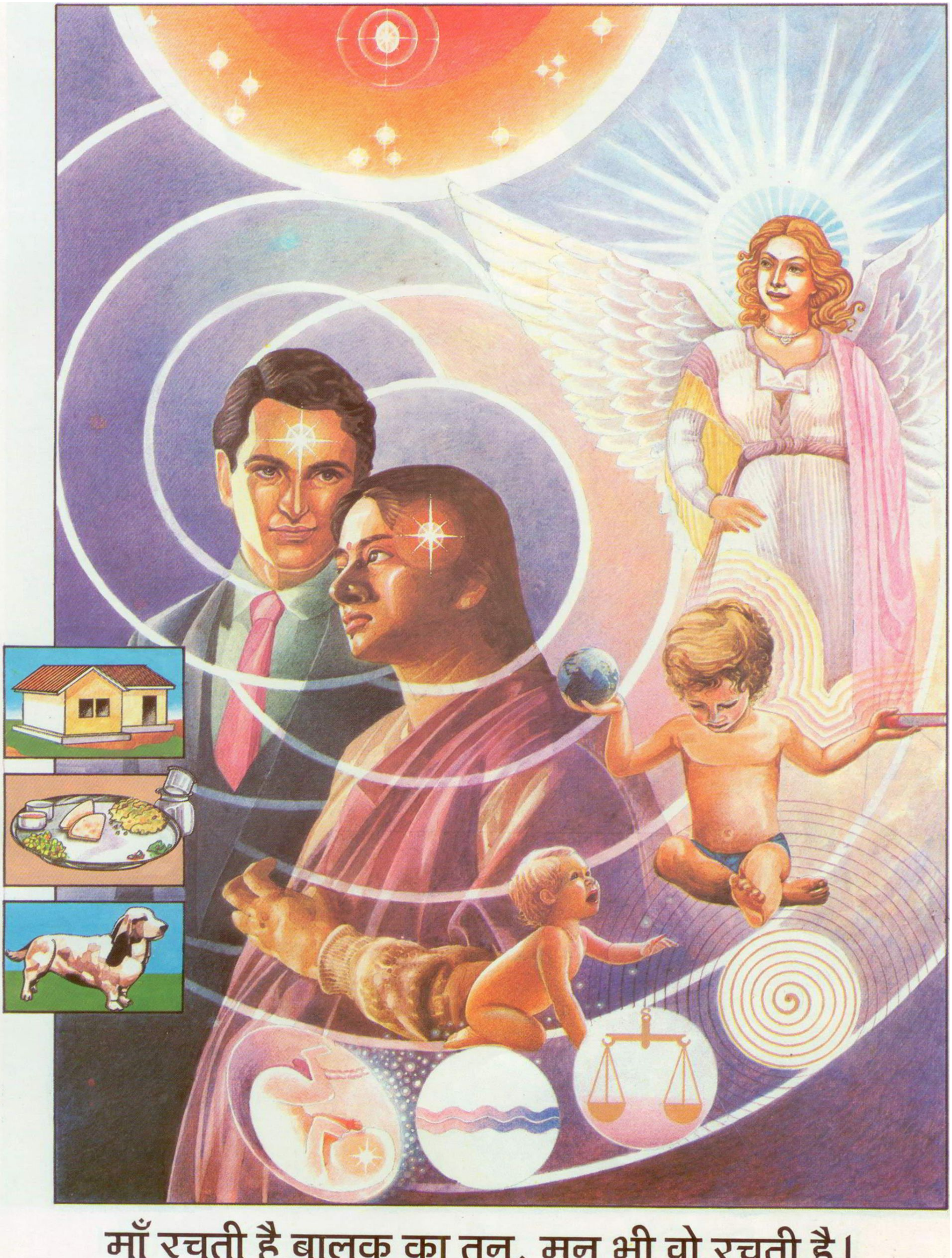

माँ रचती है बालक का तन, मन भी वो रचती है।
प्रभु स्मृति के बल से, सर्वांगीण विकास वो करती है।।

नारी सशक्तिकरण से सर्वांगीण विकास

आत्मिक ज्ञान से नारी का सर्वांगीण विकास होता है अर्थात् शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक सभी रूपों में पूर्ण विकसित होकर वह परिवार का भी उद्धार करती है तथा विश्व परिवर्तन के कार्य में भी सहयोगी बनती है।

चित्र में दर्शाया है कि आध्यात्मिक संस्कारों से युक्त नारी अपने श्रेष्ठ संकल्प, श्रेष्ठ आचरण द्वारा गर्भस्थ शिशु के मन, बुद्धि, संस्कारों को प्रभावित करती है। ऐसा बालक जब जन्म लेता है तो वह स्वाभाविक रूप से सुसंस्कारित होता है जिससे वह जीवन में न केवल स्वयं का कल्याण करता है परन्तु विश्व कल्याण की भावना से ओतप्रोत होकर अन्य अनेकों के लिये भी प्रेरक बन जाता है।

आत्म-स्थित नारी के शान्त, शुद्ध, पवित्र विचार घर के वातावरण को भी शान्त, शुद्ध, पवित्र बनाते हैं।फिर घर-गृहस्थ एक जंजाल नहीं रहता परन्तु गुणों की खुशबू से सुवासित आश्रम में परिवर्तित हो जाता है। ऐसी नारी अपने पति के लिये प्रेरणा बनकर उसे भी आप समान बनाकर सहयोगी बना लेती है।

उसके विचारों का प्रभाव अन्न पर भी पड़ता है। कहावत है – जैसा अन्न, वैसा मन। श्रेष्ठ, शुद्ध विचारों एवं ईश्वरीय स्मृति में बनाया गया भोजन, परिवार के सदस्यों के शरीर को स्वस्थ करने के साथ-साथ मन को भी शान्ति, शक्ति देता है। घर में रहने वाले पशु भी नारी के विचारों से निर्मित श्रेष्ठ वातावरण में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, उनका अनुकूल विकास होता है। इस प्रकार भौतिक सम्पन्नता के साथ-साथ आत्मिक सम्पन्नता के सन्तुलन से सशक्त नारी, सर्वांगीण विकास का आधार बन जाती है।

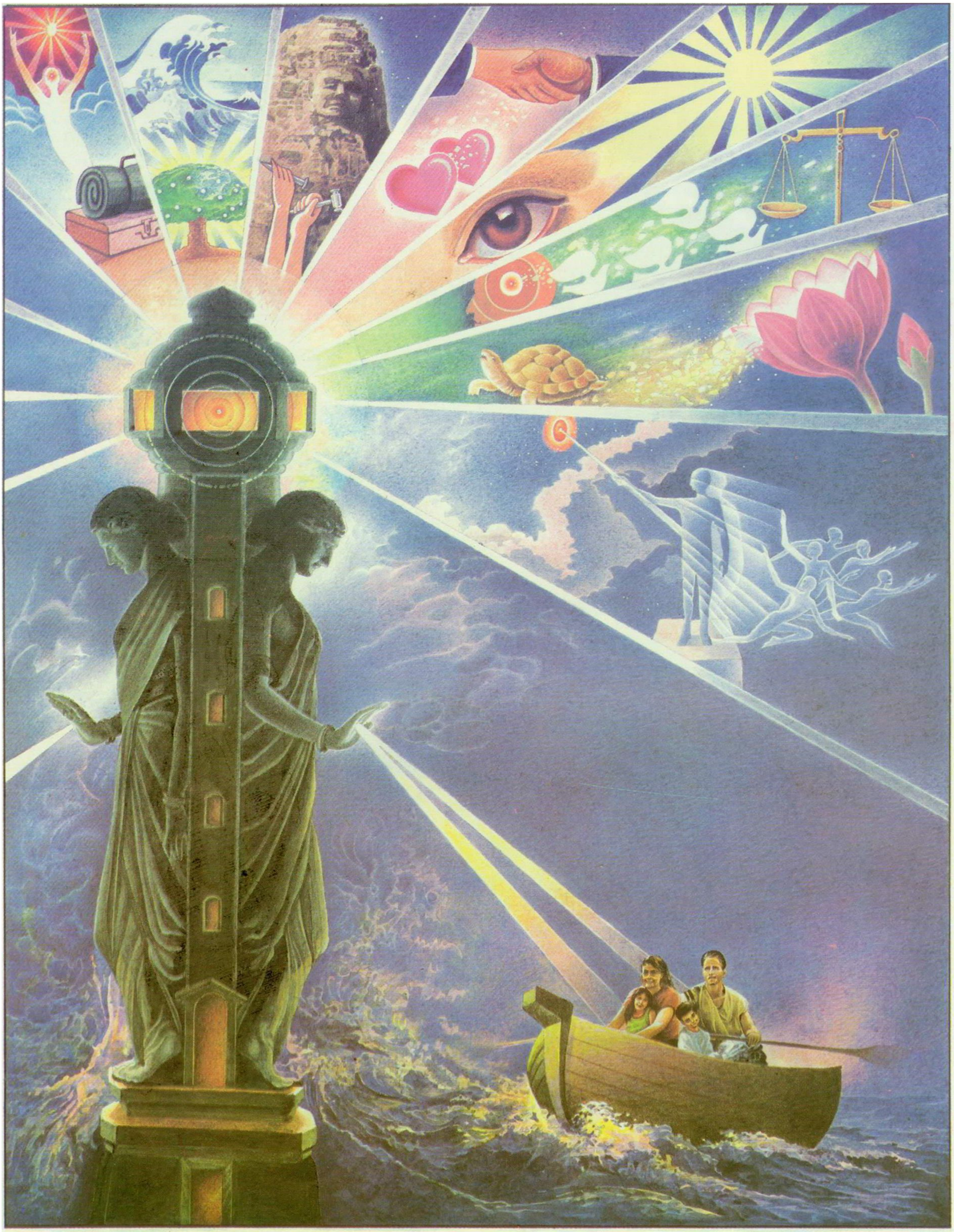

विजय विकृति पर वो पाती, श्वेत धवल बन जाती।
अतीन्द्रिय सुख अनुभव करती, जग को सम्पन्न बनाती।।

नारी एक दीप-स्तम्भ

परमपिता परमात्मा शिव द्वारा प्राप्त आध्यात्मिक ज्ञान को धारण कर एवं निरन्तर योगाभ्यास द्वारा नारी एक आध्यात्मिक दीप-स्तम्भ बन जाती है। चित्र में दर्शाया गया है कि जिस प्रकार समुद्र में स्थित प्रकाश-स्तम्भ, सागर में आने-जाने वाले जहाजों का दिशा-निर्देश करता है, उसी प्रकार इस संसार रूपी सागर में दुःख एवं अशान्ति से पीड़ित, परमात्मा की खोज में भटकती हुई आत्माओं को सशक्त नारी, मंजिल (परमात्मा) का ठिकाना देती है।

इस महान् कार्य को सम्पन्न करने के लिये वह पहले स्वयं को ईश्वरीय ज्ञान एवं योग द्वारा प्राप्त आठ शक्तियों एवं दिव्य गुणों से सुसज्जित करती है।

ज्ञान - योग के बल से उसमें सामना करने की शक्ति आ जाती है। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों पर विजय पाकर, पवित्र बन जाती है। पवित्रता के बल से कर्मेन्द्रियों पर कछुए के समान नियंत्रण हो जाता है जिससे मन की चंचलता समाप्त हो जाती है और सच्ची शान्ति की अनुभूति होती है। शान्त मन, उचित एवं सही निर्णय लेने में सक्षम होता है। ज्ञान से, परखने की शक्ति उन्नत होती है। सर्व आत्मायें एक परमात्मा की सन्तान होने के नाते भाई-भाई हैं, इस निश्चय से प्रेम एवं सहयोग के गुण स्वतः ही व्यवहार में आने लगते हैं। जहाँ प्रेम और सहयोग की भावना है, वहाँ सहन करना सहज होता है। जिस प्रकार पत्थर, छैनी और हथौड़ी के प्रहार सहकर पूजनीय मूर्ति बन जाते हैं, इसी प्रकार, नारी भी वर्तमान विश्व की विपरीत परिस्थितियों के प्रहारों के बावजूद पूजनीय पद को प्राप्त करती है और दाता बन फलों से लदे वृक्ष के समान समाज के लिये अनुकरणीय बन जाती है। वह विशाल दिल बन शुभ-अशुभ सभी बातों को अपने में समाकर सम्पूर्णता एवं सम्पन्नता के मार्ग पर आगे बढ़ती जाती है। सम्पूर्णता की समीपता से सर्व इच्छायें, आशायें समाप्त हो जाती हैं तथा मन-बुद्धि व्यर्थ से सिमटकर लक्ष्य की तरफ एकाग्र होने लगते हैं। आत्मा, परमात्मा की याद में सहज स्थिर होकर, उनकी समीपता एवं उनके समान स्थिति का अनुभव करने लगती है।

हद से बाहर आ करके, वह जगदम्बा कहलाई।
लगे पूजने उसको सब ही, विश्व उद्धारक वह कहलाई।।

राजयोग से विश्व उद्धारक -विश्व जननी माता

कामिनी और कल्याणी – दोनों ही नारी के रूप हैं परन्तु दोनों में जमीन और आसमान का अन्तर है। एक देह के बन्धन में फँसी पिंजरे की मैना है और दूसरी देहअभिमान से मुक्त, उन्मुक्त आकाश का उड़ता पंछी है।

माता केवल बच्चों की ही गुरु नहीं होती बल्कि मां का प्रभाव सारे कुटुम्ब-परिवार पर होता है। वह घर की रक्षिका देवी है। वह ही चरित्र को संवारने-सुधारने और मर्यादा को कायम रखने के निमित्त है। आज भी लोग माताओं की उपस्थिति में किसी मर्यादाहीन कार्य को करने में झिझकते हैं क्योंकि माताओं का नैतिक स्तर ऊँचा होता है।

परमपिता परमात्मा शिव से प्राप्त राजयोग की शिक्षा से साधारण से साधारण नारी भी, विश्व उद्धारक जगतमाता बन जाती है। अभी तक वह अपने-पराये के भेदभाव के कारण, परायों का हित नहीं सोच पाती थी परन्तु राजयोग की शिक्षा से उसे यह समझ प्राप्त हो जाती है कि प्रत्येक आत्मा, चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, देश, सम्प्रदाय की हों, एक ही परमपिता की सन्तानें हैं तो अब पूरा विश्व ही अपना परिवार हैऔर इस नाते सभी के प्रति ममता, प्रेम, करुणा की भावना जागृत होने से वह विश्व कल्याण के लिये चिन्तन करने लगती है। पारिवारिक कर्त्तव्य पूर्ण करते हुये भी, विश्व मंगल की कामना से वह सबके लिये ममतामयी बन जाती है। भावनायें हद से निकल विस्तृत होकर बेहद में आ जाती हैं। अपनत्व एवं ममत्व की सीमायें टूट जाती हैं। वह दुःखी संसार को सुखी संसार में परिवर्तित करने के कार्य में लग जाती है। इसीलिये आज भी ऐसी माताओं की घर-घर में देवी रूप में पूजा होती है। माता पूजन, श्रेष्ठ रिवाज बन गये हैं। माता के नाम पर जागरण इसी आत्म-जागरण की स्मृति है, यादगार है।

परमात्मा शिव, साकार ब्रह्मा के माध्यम से उसे फैशनपरस्ती, अनैतिक आचरण, अश्लीलता, कुदृष्टि,कुवृत्ति, फूहड़ विज्ञापनों आदि से मुक्त कर, नारीत्व की हदों और मन की दीवारों से निकालकर, वृहद् विश्व की उद्धारक, कल्याणी माता के पद पर आसीन करते हैं और इस प्रकार वह ज्ञान और योग के पंखों से उन्मुक्त गगन का पंछी बन ईश्वरीय सन्देश देने लगती है और साधारण नारी से बदल दैवी पथ की राही बन जाती है।

महिला प्रभाग का लक्ष्य एवं उद्देश्य

राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के अन्तर्गत समाज के विभिन्न वर्गों की आध्यात्मिक प्रगति हेतु अनेक प्रकार की सेवायें की जा रही हैं, उसमें महिला प्रभाग की महिलाओं के नैतिक एवं आध्यात्मिक सशक्तिकरण हेतु अनेक कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसमें एक तो महिलाओं को पारिवारिक मूल्यों का प्रशिक्षण देने से सम्बन्धित कार्यक्रम हैं क्योंकि परिवार ही समाज की इकाई है और परिवार तथा उसमें महिलायें ही बच्चों के विकास के लिये विशेष रूप से उत्तरदायी हैं। इसके अन्तर्गत पारिवारिक मूल्य विषय पर 3 दिन का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसके माध्यम से महिलाओं को ऐसी विधियाँ अथवा युक्तियाँ बताईं जाती हैं और ऐसे मूल्यों की धारणा की ओर ध्यान खिंचवाया जाता है, जिससे उनके घर परिवार में शान्ति, खुशी, सुव्यवस्था, स्वच्छता, स्नेह हो।

2. उनका स्वयं का जीवन सशक्त, स्वमानयुक्त, सुसंस्कारित हो। वह स्वयं को अबला नहीं वरन् शिव-शक्ति अनुभव करें।

3. अनेक प्रकार के विषयों को लेकर सम्मेलन एवं सेमिनार आयोजित किये जाते हैं, इनमें भाग लेकर महिलायें न केवल महिला सम्बन्धी समस्याओं पर विचार करती हैं परन्तु स्वयं के सशक्तिकरण को लेकर विचार-विनिमय भी करती हैं।

4. आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिये त्रिदिवसीय राजयोग शिविर भी कराये जाते हैं। इससे उनके दृष्टिकोण, मनोवृत्ति में परिवर्तन आता

है। जीवन में शान्ति, उमंग-उत्साह, आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव होता है और वे छोटी-छोटी बातों से ऊपर उठकर, सुखी जीवन जीने की कला सीखती हैं।

5. प्रभाग द्वारा केवल बुद्धिजीवी एवं प्रतिष्ठित महिलाओं की ही सेवायें नहीं होती बल्कि गाँव-गाँव में आदिवासी इलाकों में अथवा झुग्गी-झोंपड़ी में बसे हुए लोगों में भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सेवाओं का लाभ पहुँचाया जाता है।